

---

## Shri Veda Vyasa Stotram 5

---

# श्रीवेदव्यासस्तोत्रम् ५

---

## Document Information



---

Text title : Shri Veda Vyasa Stotram 5

File name : vedavyAsastotram5.itx

Category : deities\_misc, gurudev

Location : doc\_deities\_misc

Author : Yadavarya

Transliterated by : Krishnananda Achar

Proofread by : Krishnananda Achar

Latest update : May 15, 2020

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 31, 2020

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीवेदव्यासस्तोत्रम् ५



सुखमुखगुणबिम्बः साधुमार्गावलम्बः

सुमति जलजमोदो दूषितान्यप्रमोदः ।

भुवन वितत मोहध्वान्त विध्वंसकेतुः

दिशतु दृशमभीष्टां व्याससूर्यः स्वनिष्ठाम् ॥ १ ॥

आनन्दादि गुणोद्विक्तमानन्दादिपदाभिधम् ।

आनन्दमुनिपं व्यास स्वानन्दाय भजेमुहुः ॥ २ ॥

विदोषभाश्चिन्तितसन्मनोरथप्रदेशः सुधीमण्डल मण्डनायितः ।

सदा ममाज्ञानतमोविनाशकः श्रुतीश चिन्तामणिरस्तु भूतिदः ॥ ३ ॥

वासवीवियति व्यक्तं परापरविभासकम् ।

व्यासाभिधमहं वन्दे महामोहतमोपहम् ॥ ४ ॥

(श्रीमन्यायसुधा टिप्पणि)

व्यास भारतकर्तारं मध्वं मूलगुरुं तथा ।

चेतो वाग्देवतां वाणीं गुरुंश्च प्रणमाम्यहम् ॥ ५ ॥

व्यासं सर्वगुणावासं वासवीनन्दनं प्रभुम् ।

श्रीनिवासं सदा वन्दे भासमानं हृदम्बरे ॥ ६ ॥

(श्री यमकभारत टिप्पणि)

भूखण्ड प्रकटीकृतामलवपुः विस्तारिताशेषगु

र्वेदान्ताब्ज विकासको हरिर्जगत्त्वप्रकाशप्रदः ।

ध्वस्तध्वान्तततिः शरण्य जनसन्मार्गप्रदर्शी मुहुः

वेदव्यास दिवाकरो लसतु मे हार्दाम्बरे सर्वदा ॥ ७ ॥

(श्रीमद्भागवत प्रथम स्कन्ध टिप्पणि)

वासवीनन्दनं व्यासं वासुदेव पराभिदम् ।

श्रीशं नौमि सदा मध्वहृदयाम्बुज वासिनम् ॥ ८ ॥

(श्रीमद्भागवत प्रथम स्कन्ध टिप्पणि)

सत्यवत्यालवालोत्थं सद्धिद्यालतया युतम् ।  
नाना शाखाभिरुत्कृष्टं व्यास कल्पद्रुमं भजे ॥ ९ ॥

(श्रीमद्भागवत द्वितीय स्कन्ध टिप्पणि)

सुखज्ञानादि सद्रत्नः शुकयोगीन्दु सम्भवः ।  
व्यासदेवामृताम्बोधिः भूयाद्भूत्यै ममानिशम् ॥ १० ॥

(श्रीमद्भागवत तृतीय स्कन्ध टिप्पणि)

सत्यवत्यालवालोत्थं वेदशाखोपबृंहितम् ।  
शुकादिद्विजसन्नादं व्यास कल्पद्रुमं भजे ॥ ११ ॥

(श्रीमद्भागवत चतुर्थ स्कन्ध टिप्पणि)


सुखादिगुण सम्पूर्णं दुःखाज्ञान विवर्जितम् ।  
शुकादिमुनि मध्यस्तं व्यासयोगीशमाभजे ॥ १२ ॥

(श्रीमद्भागवत सप्तम स्कन्ध टिप्पणि)


इति श्रीयादवार्यविरचितं श्रीवेदव्यासस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Krishnananda Achar

---

——  
*Shri Veda Vyasa Stotram 5*

pdf was typeset on May 31, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

